

शाबाश इंडिया



@ShabaasIndia

प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड़, टोंक रोड, जयपुर

आरयूएचएस में एमबीबीएस बैच 2026 की व्हाइट कोट एवं कैडेवरिक ओथ सेरेमनी आयोजित

सफेद कोट केवल परिधान नहीं, रोगी के विश्वास, आशा और समर्पण का प्रतीक : श्रीनिवास

2047 तक विकसित राजस्थान के संकल्प में युवा चिकित्सकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण



कड़ी मेहनत से मिली सफलता, अब समाज को लौटाने का समय

चिकित्सा शिक्षा विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने नवप्रवेशित विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को बधाई देते हुए कहा कि नीट (यूजी) जैसी कठिन परीक्षा वर्षों की मेहनत और धैर्य से उत्तीर्ण कर विद्यार्थी प्रदेश के श्रेष्ठ संस्थान में पहुंचे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को माता-पिता के त्याग को सदैव याद रखने और भविष्य में अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए उनके साथ खड़े रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा के इस दौर में जब किसी जीवित इंसान का उपचार किया जाता है, तो वहां मल्टीपल चॉइस की कोई गुंजाइश नहीं होती, इसके लिए गहन अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

प्रतिदिन योग, माइंडफुलनेस, जिम व खेलकूद को दिनचर्या में शामिल करने तथा लेखन व ललित कला जैसी रचनात्मक गतिविधियों से जुड़ने की सलाह दी। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े एक प्रश्न के उत्तर में श्रीनिवास ने बताया कि प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत योजना और राज्य सरकार के प्रयासों से ग्रामीण स्वास्थ्य ढांचे में अभूतपूर्व बदलाव आया है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में एएनएम की उपलब्धता, शत-प्रतिशत टीकाकरण और प्रसवपूर्व देखभाल सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने कहा कि आज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र 100 बेड, जिला अस्पताल 500 बेड और मेडिकल कॉलेज 2000 से अधिक बेड के साथ विशाल स्वरूप ले रहे हैं, जिससे गांवों में सेवा देना एक परिवर्तनकारी अनुभव होगा। उन्होंने एक अन्य प्रश्न के उत्तर में कहा कि मेडिकल क्षेत्र में अकादमिक उत्कृष्टता एवं शोध के लिए उन्होंने विद्यार्थियों को द लैसेट तथा नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्रकाशन पढ़ने, सेमिनार व कार्यशालाओं में सक्रिय भागीदारी करने और प्रख्यात चिकित्सक डॉ. बी. राममूर्ति की जीवनी से प्रेरणा लेने का सुझाव दिया।

नवप्रवेशित विद्यार्थियों से मुख्य सचिव का आत्मीय संवाद, सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं

जयपुर, शाबाश इंडिया

राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय में बुधवार को एमबीबीएस बैच 2026 के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए व्हाइट कोट एवं कैडेवरिक ओथ सेरेमनी का गरिमामय आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने कहा कि सभी व्यवसायों में चिकित्सा का पेशा सबसे अनूठा और सर्वोच्च है, जो उच्च स्तर की प्रतिबद्धता, सेवा के प्रति असीम जुनून और समर्पण की मांग करता है।

सफेद कोट में रोगी को दिखती है जीवन की आशा

श्रीनिवास ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि सफेद कोट केवल एक परिधान नहीं है।

डिजिटल युग में भी मानवीय संवेदना सर्वोपरि

मुख्य सचिव ने चरक शपथ का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय चिकित्सा पद्धति में सदैव सहायुभूति और निस्वार्थ सेवा पर बल दिया गया है। उन्होंने कहा कि आज का युग एआई, स्मार्ट क्लासरूम और पूर्णतः डिजिटल सरकारी अस्पतालों का है, लेकिन तकनीक का उपयोग अस्पताल में मरीज की यात्रा को सुगम बनाने के लिए होना चाहिए। किसी भी चिकित्सक की यात्रा के केंद्र में सदैव मरीज ही रहता है और इस मानवीय पहलू को कभी खोना नहीं चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रखने, पुस्तकालय में समय बिताने तथा नर्सिंग एवं पैरामेडिकल स्टाफ के साथ बेहतर समन्वय से कार्य करने की सीख दी। उन्होंने कहा कि वर्ष 2047 तक विकसित राजस्थान और हेल्थ फॉर ऑल के लक्ष्य को साकार करने की बड़ी जिम्मेदारी इन्हीं युवा कंधों पर है।

अस्पताल आने वाले हजारों मरीजों को इस कोट में जीवन बचाने की अंतिम उम्मीद, विशेषज्ञता और पीड़ा से मुक्ति दिखाई देती है। यह सफेद रंग इरादों की पवित्रता, नैदानिक सटीकता और पूर्ण पारदर्शिता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि कोट धारण करते ही चिकित्सक अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और समस्याओं को पीछे छोड़कर रोगी के कल्याण को ही सर्वोच्च प्राथमिकता बना लेते हैं। उन्होंने वरिष्ठ एवं कनिष्ठ रेजिडेंट चिकित्सकों के समर्पण की सराहना करते हुए कहा कि चिकित्सक लगातार 48 से 72 घंटे तक बिना

घर गए अस्पतालों में सेवाएं देते हैं, जो इस पेशे के प्रति उनके अद्वितीय जुनून को दर्शाता है।

विद्यार्थियों से संवाद : सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं

समारोह के दौरान मुख्य सचिव ने विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए उनसे आत्मीय संवाद किया। उन्होंने कहा कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। उत्कृष्टता की निरंतर खोज और प्रतिदिन 15 से 20 घंटे की कड़ी मेहनत ही एक चिकित्सक को महान बनाती है। तनावमुक्त रहने के लिए उन्होंने विद्यार्थियों को

❖ श्री महावीराय नमः ❖

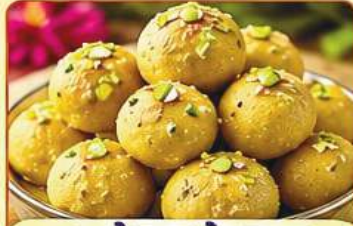
श्री वीर इवेंट प्लानर्स

दीपावली पावन पर्व के शुभवासर पर
शुद्ध देशी घी एवं शुद्धता के साथ निर्मित मिठाईयां



1. बूंदी के लड्डू
(शुद्ध देशी घी)

350/- रु किलो



2. बेसन के लड्डू
(देशी घी)

400/- रु किलो



3. मुंगथल

425/- रु किलो



4. सादा बर्फी

425/- रु किलो



5. मिल्क केक

450/- रु किलो



6. केसर बर्फी

500/- रु किलो



7. चाकलेट बर्फी

500/- रु किलो



8. काजू कतली

800/- रु किलो



9. ग्लेब पेठा

450/- रु किलो



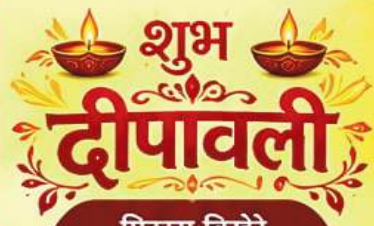
10. थाल बर्फी

425/- रु किलो



11. गुलाब जामुन

425/- रु किलो



शुभ
दीपावली

मिठास बिखरे
हर घर, हर मन में
खुशियों की रोशनी

नोट :

- 1 ऑर्डर एडवांस बुकिंग पर ही उपलब्ध होगा।
- 2 ऑर्डर की सप्लाय 6 नवंबर 2026 से प्रारंभ हो जाएगी।
- 3 एडवांस जमा होने पर ही ऑर्डर बुक किया जाएगा।
- 4 गिफ्ट पैकिंग के अतिरिक्त चार्ज रहेंगे।
- 5 6-7 कि.मी तक डिलवरी चार्ज फ्री रहेगा।

बुकिंग के लिए संपर्क करें

अभिषेक जैन बिट्टू

☎ मो.- 9829566545

शुभ दीपावली



राघौगढ़ में श्रमण धारा प्रवचन माला

जीवन में राजा बनने के बजाय राजा बनाने वाले बनें : मुनि श्रमण सागर जी



राघौगढ़, शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन आचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, प्रवचन वाचस्पति, ओजस्वी वक्ता एवं बुंदेली आशु कवि मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने राघौगढ़ में आयोजित श्रमण धारा प्रवचन माला में 'राजा बनाने वाले का महत्त्व' विषय पर मंगल प्रवचन किया। मुनि श्री ने कहा कि राजा से अधिक सम्मान कई बार राजा बनाने वाले को मिलता है। जो व्यक्ति राजा बनता है, उसे सभी सम्मान देते हैं, लेकिन राजा को राजा बनाने वाले व्यक्ति का सम्मान स्वयं राजा भी करता है। उन्होंने कहा कि जीवन में स्वयं राजा बनने के बजाय राजा बनाने वाला बनने का प्रयास करना चाहिए। मुनि श्री ने पौराणिक प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा कि करीब 2,000 वर्ष पूर्व तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य चाणक्य अपने शिष्यों को शिक्षा देते थे। चाणक्य बुद्धिमान, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, धर्मपरायण और राष्ट्रप्रेमी थे। उस समय यूनान से समाचार आया कि सिकंदर भारत पर आक्रमण करने आ रहा है। चाणक्य मगध के राजा धनानंद के दरबार में पहुंचे और उन्हें भारत पर होने वाले संभावित आक्रमण की जानकारी दी। मुनि श्री के अनुसार, धनानंद ने चाणक्य का अपमान कर उन्हें दरबार से बाहर निकलवा दिया। उन्होंने बताया कि इसके बाद चाणक्य ने अपनी चोटी की गांठ खोलकर प्रतिज्ञा ली कि वे मगध के राजसिंहासन पर योग्य राजा को बैठाएंगे। एक दिन चाणक्य की मुलाकात एक शिकारी के यहां काम कर रहे 10 वर्षीय युवक से हुई। युवक की प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्होंने शिकारी को 1,000 मोहरें देकर उसे अपने साथ तक्षशिला ले आए। वहां करीब 10 वर्षों तक उसे कूटनीति, धनुर्विद्या, अर्थशास्त्र और राजनीति सहित विभिन्न विधाओं की शिक्षा दी। मुनि श्री ने कहा कि जब वह युवक 22 वर्ष का हुआ तो चाणक्य ने उसे मगध के सिंहासन पर बैठाया। यही युवक आगे चलकर सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने कहा कि चाणक्य स्वयं इतने तीक्ष्ण बुद्धि के थे कि चाहें तो सत्ता प्राप्त कर सकते थे, लेकिन उन्होंने स्वयं राजा बनने के बजाय चंद्रगुप्त मौर्य को सम्राट बनाया। चंद्रगुप्त मौर्य भी आचार्य चाणक्य का अत्यंत सम्मान करते थे। मुनि श्री ने कहा कि राष्ट्रप्रेम और 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना रखने वाला व्यक्ति स्वयं राजा बनने के बजाय राजा बनाने वाला बन सकता है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर राष्ट्रप्रेम की भावना होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के जैन धर्म से जुड़े होने का भी उल्लेख मिलता है। उनके अनुसार, बाद में चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने पुत्र को राजपाट सौंपकर जैनश्वरी दीक्षा ग्रहण की। मुनि श्री ने एक अन्य उदाहरण देते हुए कहा कि सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री पद स्वीकार करने के बजाय डॉ. मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बनाया। उन्होंने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह ने भी लंबे समय तक सोनिया गांधी का सम्मान किया। जैन दर्शन का उल्लेख करते हुए मुनि श्री ने आचार्य अकलंक एवं आचार्य निकलंक के प्रसंग का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि दोनों भाई नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययनरत थे। उस समय वहां बौद्ध धर्म को प्राथमिकता दी जाती थी। जैन धर्म से जुड़े होने का पता चलने के बाद आचार्य निकलंक ने बलिदान देकर अकलंक स्वामी के जीवन की रक्षा की और धर्म की रक्षा में योगदान दिया। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज ने अपने संघस्थ मुनि विद्यासागर जी महाराज को आचार्य पद प्रदान किया। आचार्य विद्यासागर जी महाराज के आचार्यत्व में धर्म साधना करते हुए उन्होंने समाधि प्राप्त की। आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने 131 मुनि दीक्षाएं प्रदान कीं और उनका विशाल संघ देशभर में धर्म प्रभावना कर रहा है। मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने कहा कि राजा वही बनता है जिसके भाग्य में राजपद लिखा होता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि लालकृष्ण आडवाणी प्रधानमंत्री नहीं बन सके। अंत में उन्होंने कहा कि जीवन में राजा बनने की अपेक्षा राजा बनाने वाला बनने का प्रयास करना चाहिए। प्रवचन के दौरान मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने अपनी लोकप्रिय स्वरचित कविता "अभी उन्हें अपना पता ही नहीं है" भी सुनाई, जिसे श्रद्धालुओं ने सराहा।

किशनगढ़ में 30 अक्टूबर को होगा जैनेश्वरी दीक्षार्थियों का गोद भराई कार्यक्रम

16 दिसंबर को जयपुर में आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज प्रदान करेंगे तीन जैनेश्वरी दीक्षाएं



मदनगंज-किशनगढ़, शाबाश इंडिया। परम पूज्य आचार्य श्री 108 विहर्षसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में तीन जैनेश्वरी दीक्षार्थियों का गोद भराई कार्यक्रम 30 अक्टूबर, शुक्रवार को शाम 6:30 बजे आर.के. कम्युनिटी सेंटर, किशनगढ़ में आयोजित किया जाएगा। आचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी महाराज के करकमलों से 16 दिसंबर 2026 को जयपुर में तीन जैनेश्वरी दीक्षाएं प्रदान की जाएंगी। इसी पावन अवसर की मंगल भावना के साथ दीक्षार्थी ब्रह्मचारी अतिशय भैया, ब्रह्मचारी विशाल भैया एवं ब्रह्मचारी रोहित भैया का गोद भराई कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में दीक्षार्थियों के प्रति मंगलभावनाएं व्यक्त की जाएंगी। साथ ही, उनके संयममय एवं आध्यात्मिक जीवन की मंगलमय यात्रा के लिए शुभकामनाएं अर्पित की जाएंगी।



DOLPHIN WATERPROOFING

आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।

छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण

For Your New & Old Construction

RAJENDRA JAIN



Mo. 80036-14691

116/194, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur

राजनीति

सवाल खड़े करती बयानबाजी

लोकतंत्र में राजनीतिक मतभेद स्वाभाविक हैं। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच नीतियों, निर्णयों और कार्यशैली को लेकर बहस लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती का प्रतीक है। लेकिन जब राजनीतिक चर्चा मुद्दों से हटकर व्यक्तिगत टिप्पणियों तक पहुंच जाती है, तब सार्वजनिक जीवन में भाषा की मर्यादा पर सवाल खड़े होने लगते हैं। राजनीतिक नेताओं के वक्तव्य केवल व्यक्तिगत विचार नहीं होते, बल्कि उनका प्रभाव करोड़ों लोगों तक पहुंचता है। इसलिए सार्वजनिक जीवन में सक्रिय नेताओं से संयमित और जिम्मेदार भाषा की अपेक्षा की जाती है। हाल ही में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पिता को लेकर की गई कथित विवादित टिप्पणी के विरोध में भारतीय जनता पार्टी ने देशभर में प्रदर्शन किए और माफी की मांग उठाई। इस घटनाक्रम ने एक बार फिर राजनीतिक संवाद की मर्यादा और नेताओं की जवाबदेही को चर्चा के केंद्र में ला दिया है। नई दिल्ली से लेकर पटना, बेंगलुरु, लखनऊ, जम्मू और जयपुर तक भाजपा कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन कर अपना आक्रोश व्यक्त किया। विभिन्न स्थानों पर नारेबाजी और पुतला दहन किया गया। भाजपा ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी से भी माफी की मांग की। बिहार में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष संजय सरावगी के नेतृत्व में जन आक्रोश मार्च निकाला गया। जयपुर में भी भाजपा के विभिन्न मोर्चों के कार्यकर्ताओं ने विरोध जताया। दिल्ली सहित कुछ अन्य शहरों में प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिए जाने की खबरें सामने आईं। हालांकि, इस घटनाक्रम को केवल एक राजनीतिक दल के विरोध प्रदर्शन के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। इसके पीछे सार्वजनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाली भाषा को लेकर व्यापक सवाल भी जुड़े हैं। भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में अलग-अलग विचारधाराओं और राजनीतिक मान्यताओं के लोगों को अपनी बात रखने की स्वतंत्रता है। इस स्वतंत्रता का सम्मान तभी सार्थक है, जब वैचारिक असहमति को व्यक्तिगत अपमान में बदलने से बचा जाए। किसी प्रधानमंत्री की नीतियों की आलोचना करना, सरकार के फैसलों पर सवाल उठाना और चुनावी वादों का हिसाब मांगना विपक्ष का लोकतांत्रिक अधिकार है। इसी प्रकार विपक्ष की आलोचना करना सत्ता पक्ष का भी अधिकार है। आलोचना का केंद्र नीतियां, कार्य और निर्णय होने चाहिए, परिवार या निजी संबंध नहीं। -कांतिलाल मांडोत

संपादकीय

निजता पासवर्ड पर नहीं, कानून पर टिकी है

एक जमाना था जब निजता का मतलब घर का दरवाजा बंद करना था। आज निजता का मतलब मोबाइल का स्क्रीन लॉक, ओटीपी, फिंगरप्रिंट और वह छोटा-सा टिक है, जिसे हम बिना पढ़े हर ऐप पर लगा देते हैं। वही एक टिक हमारी डिजिटल जिंदगी की चाबी किसी और को सौंप सकता है। हम कहाँ जाते हैं, क्या खरीदते हैं, किससे बात करते हैं, हमारी पसंद-नापसंद और कई बार हमारी संवेदनशील जानकारी—यह सब अब डायरी में नहीं, सर्वर पर है। सर्वर किसी दूसरी कंपनी या देश में भी हो सकता है। इसीलिए डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 यानी डीपीडीपी कानून भारत की डिजिटल व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण बदलाव है। इसका मकसद व्यक्तिगत डेटा के इस्तेमाल में जवाबदेही, पारदर्शिता और नागरिकों के अधिकारों को मजबूत करना है। इस व्यवस्था की अहम कड़ी है सहमति। जहां सहमति जरूरी है, वहां डेटा लेने वाली संस्था को स्पष्ट और समझने योग्य जानकारी देनी होगी। सहमति वापस लेने का अधिकार भी है। हालांकि इसका अर्थ यह नहीं कि हर स्थिति में डेटा तुरंत मिट जायगा; कानूनी जरूरत या अन्य वैध आधार होने पर डेटा रखा जा सकता है। बच्चों के डेटा को लेकर भी कानून विशेष सावधानी की मांग करता है। 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे को लेकर सहमति और डेटा-प्रसंस्करण पर अतिरिक्त दायित्व हैं। बच्चों की ट्रैकिंग, व्यवहार-निगरानी और लक्षित विज्ञापन जैसे कुछ कामों पर रोक है। डिजिटल दुनिया में संदेश स्पष्ट है



बच्चा विशेष सुरक्षा का हकदार है। जवाबदेही का एक बड़ा पहलू डेटा सुरक्षा है। डेटा फिड्युशियरी को उचित सुरक्षा उपाय अपनाने होंगे। डेटा उल्लंघन होने पर प्रभावित लोगों को सूचना देना और भारतीय डेटा संरक्षण बोर्ड को निर्धारित तरीके से सूचित करना होगा। कानून में गंभीर उल्लंघनों के लिए 250 करोड़ रुपये तक के वित्तीय दंड का प्रावधान है। उद्देश्य कंपनियों की सुरक्षा-व्यवस्था को गंभीर बनाना है लेकिन कानून बन जाना ही पर्याप्त नहीं है। पहली चुनौती है जागरूकता। जयपुर के दुकानदार, सीकर के किसान और कोटा के छात्र को यह पता होना चाहिए कि उसके डेटा से जुड़े अधिकार क्या हैं और उनका इस्तेमाल कैसे किया जाए। डिजिटल साक्षरता गांव-गांव और स्कूल-स्कूल पहुंचे बिना कानून का लाभ सीमित रह सकता है। दूसरी चुनौती है सरकारी डेटा का इस्तेमाल। कानून में राज्य और उसकी संस्थाओं के लिए कुछ वैधानिक अपवाद हैं। ऐसे मामलों में पारदर्शिता और स्वतंत्र निगरानी जरूरी हैं। डेटा संरक्षण बोर्ड की संस्थागत विश्वसनीयता इसलिए महत्वपूर्ण है। तीसरी चुनौती छोटे कारोबारों की है। बड़ी कंपनियों के पास कानूनी और तकनीकी संसाधन होते हैं, लेकिन छोटे स्टार्टअप और दुकानदारों के लिए अनुपालन कठिन हो सकता है। सरल दिशानिर्देश, आसान प्रारूप और सहायता-व्यवस्था जरूरी होगी और सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारी अपनी है। मुफ्त गेम के लिए फोटो, डिस्काउंट के लिए लोकेशन और किसी ऐप के लिए जरूरत से ज्यादा परमिशन देना बंद करना होगा। कैमरा ऐप को कॉन्टैक्ट क्यों चाहिए? -राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

देश में त्योहारों का मौसम बाजारों में रौनक, कारोबार में तेजी और आम लोगों के चेहरों पर खुशियां लेकर आता है। दीपावली जैसे त्योहारों के दौरान व्यापारी वर्ग पूरे साल की कमाई के एक बड़े हिस्से की उम्मीद करता है। दुकानदारों से लेकर छोटे कारोबारियों, रेहड़ी-पटरी वालों और कर्मचारियों तक, लाखों लोगों की आजीविका इन दिनों के कारोबार पर निर्भर रहती है। ऐसे समय में यदि राजनीतिक आंदोलन, रैलियां और विरोध-प्रदर्शन बाजारों तथा व्यापारिक गतिविधियों को प्रभावित करें, तो सवाल उठना स्वाभाविक है कि इसकी कीमत व्यापारी वर्ग ही क्यों चुकाए? एक नवंबर को प्रस्तावित रैली और राहुल गांधी के नेतृत्व में चल रहे राजनीतिक विरोध के बीच व्यापारिक संगठनों की ओर से त्योहारों को देखते हुए उठाई जा रही मांगों ने बहस को नया आयाम दिया है। एक ओर विपक्ष चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता और चुनाव आयोग की जवाबदेही से जुड़े सवाल उठा रहा है, वहीं व्यापारी चाहते हैं कि त्योहारों के समय उनका कारोबार बाधित न हो। ऐसे में सवाल है कि क्या राजनीतिक दलों को आंदोलन की रणनीति तय करते समय आम नागरिकों और व्यापारियों के हितों को भी प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए? लोकतंत्र में विरोध प्रदर्शन करना विपक्ष का अधिकार है। सरकार से सवाल पूछना, चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता की मांग करना और संवैधानिक संस्थाओं की जवाबदेही पर चर्चा करना लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा है। यदि विपक्ष को चुनाव आयोग के कामकाज पर आपत्ति है, तो वह तथ्य और दस्तावेजों के आधार पर अपनी बात रखने के लिए स्वतंत्र है। लेकिन किसी आंदोलन का प्रभाव केवल राजनीतिक संदेश तक सीमित नहीं होता। यह भी देखना जरूरी है कि उससे आम जनता की रोजमर्रा की जिंदगी और आजीविका पर कितना

त्योहारों के बीच सियासी टकराव

असर पड़ता है। त्योहारों के दौरान बाजारों में ग्राहकों की आवाजाही, माल की आपूर्ति, यातायात और दुकानों के संचालन में व्यवधान छोटे व्यापारियों के लिए आर्थिक नुकसान का कारण बन सकता है। बड़े कारोबारी कुछ समय का नुकसान सह सकते हैं, लेकिन छोटे दुकानदार और दैनिक आय पर निर्भर विक्रेता हर दिन की कमाई पर निर्भर रहते हैं। इसलिए व्यापारिक संगठनों की मांग को केवल राजनीतिक नजरिये से देखना उचित नहीं होगा। इस पूरे घटनाक्रम में सरकार की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। यदि आंदोलन को लेकर राजनीतिक गतिरोध बढ़ रहा है तो सरकार और संबंधित संस्थाओं को संवाद का रास्ता तलाशना चाहिए। हालांकि, यह निष्कर्ष निकालने के लिए ठोस प्रमाण जरूरी हैं कि किसी पक्ष ने जानबूझकर राजनीतिक पेच खड़ा किया है। आरोप-प्रत्यारोप के बजाय तथ्यों और संवैधानिक प्रक्रियाओं के आधार पर समाधान तलाशना अधिक उचित होगा। विपक्ष को भी स्पष्ट करना चाहिए कि उसका आंदोलन किन ठोस मांगों पर आधारित है और आम लोगों को कम से कम परेशानी पहुंचाते हुए उसे कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है। यदि चुनावी प्रक्रिया में अनियमितताओं के आरोप हैं तो उनके समर्थन में प्रमाण सार्वजनिक किए जाने चाहिए। दूसरी ओर, चुनाव आयोग को भी अपनी संवैधानिक स्वतंत्रता, निष्पक्षता और पारदर्शिता के प्रति जनता का विश्वास बनाए रखना चाहिए। किसी संवैधानिक पदाधिकारी का इस्तीफा मांगना राजनीतिक अधिकार हो सकता है, लेकिन उसका स्वीकार होना अलग संवैधानिक और कानूनी प्रक्रिया का विषय है। इसलिए केवल इस्तीफे को ही किसी राजनीतिक गतिरोध का निश्चित समाधान मानना उचित नहीं होगा।

जब कोई नहीं देख रहा हो, तब आपका चरित्र क्या करता है?

दुनिया की नजरों से बच सकते हैं, लेकिन आत्मा की नजरों से नहीं: अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज
एकांत में सही आचरण करना ही वास्तविक चरित्र की पहचान—पुष्पगिरि तीर्थ पर गुरु भक्तों को मिला आत्ममंथन और आत्मसंयम का संदेश



पुष्पगिरि तीर्थ, शाबाश इंडिया

दुनिया के सामने अच्छा बनना आसान है, लेकिन जब कोई देखने वाला न हो, तब भी अपने आचरण को पवित्र बनाए रखना ही व्यक्ति के वास्तविक चरित्र की पहचान है। चेहरे पर मुस्कान, वाणी में मिठास और व्यवहार में विनम्रता से लोगों का दिल जीता जा सकता है, लेकिन चरित्र की असली परीक्षा एकांत में होती है। दुनिया की नजरों से बचना संभव है, लेकिन अपनी आत्मा की नजरों से बचना असंभव है। यह प्रेरक संदेश व्रत चक्रवर्ती पट्टविभूषण अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए दिया। पुष्पगिरि तीर्थ, सोनकच्छ में परम पूज्य तीर्थ प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी महाराज के सान्निध्य में अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय श्री पीयूष सागरजी महाराज का वषायोग चल रहा है। इसी क्रम में आयोजित धर्मसभा में आचार्य श्री ने व्यक्ति के चरित्र,

आत्मनुशासन, नैतिक मूल्यों और आत्मनिरीक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला।

भीड़ में व्यवहार सभ्यता, एकांत में आचरण चरित्र

आचार्य श्री ने कहा, “बाबू, भीड़ में अच्छा व्यवहार करना आपकी सभ्यता है, लेकिन एकांत में भी अच्छा बने रहना आपका चरित्र है।” जब कैमरा बंद हो, कोई निगरानी करने वाला न हो और गलत काम करने पर पकड़े जाने का डर भी न हो, तब व्यक्ति क्या निर्णय लेता है, यही उसके संस्कारों की वास्तविक कसौटी है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति की पहचान केवल उसके बाहरी व्यक्तित्व, वेशभूषा या सामाजिक प्रतिष्ठा से नहीं होती, बल्कि उन कार्यों से होती है, जिन्हें वह बिना किसी प्रशंसा या पुरस्कार की अपेक्षा के करता है। दुकान पर ईमानदारी, मंदिर में भक्ति और समाज के सामने विनम्रता सभी सार्थक हैं, जब यही गुण एकांत में भी कायम रहें। अवसर मिलने पर भी गलत काम से बचना ही वास्तविक चरित्र है। आचार्य

बाहरी पहरे से नहीं, भीतर के अनुशासन से बनता है चरित्र

आचार्य श्री ने आत्मसंयम की आवश्यकता बताते हुए कहा कि पुलिस के डर से ईमानदार बने रहना भय है, जबकि किसी बाहरी नियंत्रण के बिना सही आचरण करना वास्तविक अनुशासन है। सच्चा अनुशासन वह है, जिसमें पहरेदार बाहर नहीं, बल्कि भीतर होता है। उन्होंने कहा कि मन चंचल है और उसे हर समय कुछ नया चाहिए। इच्छाओं और विचारों को नियंत्रित कर उन्हें सही दिशा देना ही आत्मसंयम है। पुष्पगिरि की मौन साधना का संदेश भी यही है कि बाहर का सन्नाटा भीतर के अनुशासन और आत्मचिंतन का माध्यम बन सकता है।

छोटे-छोटे निर्णयों से बनता है चरित्र

आचार्य श्री ने कहा कि चरित्र एक दिन में तैयार नहीं होता, बल्कि प्रतिदिन लिए जाने वाले छोटे-छोटे निर्णयों से बनता है। एक बार झूठ बोलना आसान हो सकता है, लेकिन हर परिस्थिति में सच का साथ देना चरित्र है। संस्कार ऐसे वस्त्र नहीं हैं, जिन्हें अवसर देखकर पहना और उतार दिया जाए। संस्कार जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, जो व्यक्ति के विचारों, व्यवहार और निर्णयों में दिखाई देने चाहिए। उन्होंने कहा कि अच्छे संस्कारों और नैतिक मूल्यों को केवल उपदेशों तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि उन्हें दैनिक जीवन का स्थायी हिस्सा बनाना चाहिए। सही आचरण तब और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, जब गलत करने का अवसर सामने हो और फिर भी व्यक्ति सही रास्ता चुनता है।

श्री ने कहा कि दूसरों को धोखा देना आसान हो सकता है, लेकिन स्वयं को धोखा देना सबसे बड़ी भूल है। जब कोई देखने वाला न हो, तब भी सही मार्ग पर चलने का साहस ही आत्मिक जागरूकता है। व्यक्ति संसार से अपने कार्यों को छिपा सकता है, लेकिन अपनी आत्मा से कुछ नहीं छिपा सकता। उन्होंने कहा कि जीवन ऐसा होना चाहिए, जिसमें अपनी अंतरात्मा के सामने खड़े होने में कभी संकोच न हो। बाहरी प्रशंसा के बजाय अपने विवेक की आवाज सुनकर निर्णय लेने पर ही जीवन में वास्तविक नैतिकता का विकास होता है।

आत्मा को अपना गवाह बनाकर जिएं

आचार्य श्री ने कहा कि दुनिया व्यक्ति को उसके चेहरे और व्यवहार से पहचान सकती है,

लेकिन चरित्र की वास्तविक पहचान उस समय होती है, जब उसके पास गलत करने का अवसर हो और वह फिर भी सही मार्ग चुनता है। उन्होंने कहा, बाबू, कैमरे की नजर से बच सकते हो, दुनिया की नजरों से भी बच सकते हो, लेकिन अपने विवेक की अदालत से नहीं बच सकते। इसलिए जीवन ऐसा जियो कि एकांत में भी तुम्हारी आत्मा तुम्हारी गवाह बने, तुम्हारे विरुद्ध नहीं। आचार्य श्री का यह संदेश प्रत्येक व्यक्ति को आत्ममंथन की प्रेरणा देता है कि वह दूसरों को दिखाने के लिए अच्छा बन रहा है या वास्तव में अपने भीतर अच्छाई विकसित कर रहा है। सच्चा चरित्र वही है, जो बिना किसी प्रशंसा की अपेक्षा के भी सही आचरण करने की प्रेरणा दे।

नरेंद्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल, प्रचार-प्रसार संयोजक, औरंगाबाद

शाश्वत तीर्थ अयोध्या में शरद पूर्णिमा पर तीस चौबीसी जिनमंदिर पर कलशारोहण

ज्ञानाराधना पूजन हमारी नहीं, संयम और तप की पूजा है : गणिनी ज्ञानमती

अयोध्या/जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन मंदिर बड़ी मूर्ति, रायगंज, अयोध्या में आयोजित त्रिदिवसीय शरद पूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर चारित्रचंद्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 93वां जन्मोत्सव एवं 75वां संयम दिवस

26 अक्टूबर को विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। प्रातःकाल रायगंज स्थित बड़ी मूर्ति भगवान ऋषभदेव का पंचामृत अभिषेक किया गया। इसके बाद मंदिर परिसर में स्थित तीस चौबीसी जिनमंदिर के शिखर पर कलशारोहण एवं ध्वजारोहण किया गया। मध्य शिखर पर कुलाधिपति श्री सुरेश जैन, मुरादाबाद, दाई ओर श्री जिनराज जैन, दिल्ली तथा बाईं ओर श्री गजराज जैन, दिल्ली की ओर से कलशारोहण किया गया। कलशों को बगी में रखकर परिसर में भ्रमण कराया गया। इसके बाद भक्तों ने हर्षोल्लास के साथ मंदिर के शिखरों पर कलशारोहण एवं ध्वजारोहण किया। अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री विजय कुमार जैन ने बताया कि शरद पूर्णिमा महोत्सव की मुख्य सभा की अध्यक्षता तीर्थकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के कुलाधिपति सुरेशचंद्र जैन ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन, गाजियाबाद रहे।



अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संपूर्ण कार्यक्रम पीठाधीश्व स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुआ।

भक्तामर भक्ति से पावन हुआ संसार, शरद पूर्णिमा पर भक्तिपथ से महका प्रतापनगर



48 परिवारों ने 48 दीपकों से भक्तामर दीपार्चना कर मनाया आचार्य भगवंतों का जन्मजयंती महोत्सव

जयपुर.शाबाश इंडिया। प्रतापनगर के सेक्टर-17 स्थित श्री 1008 आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में शरद पूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर भक्तामर दीपार्चना का आयोजन किया गया। संगीतमयी भक्ति स्वर लहरियों के बीच 48 परिवारों ने 48

प्रज्वलित दीपकों के साथ मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान के चरणों में भक्तिमय दीपार्चना की। इस अवसर पर आचार्य भगवंतों के जन्मजयंती अवतरण दिवस एवं आर्यिका श्री 105 ज्ञानमती माताजी के 75वें संयम दिवस को श्रद्धापूर्वक मनाया गया। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद परिवार, प्रतापनगर-सांगानेर संभाग, जयपुर की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में संपूर्ण दक्षिण संभाग प्रतापनगर में गुरु भक्ति का विशेष वातावरण देखने को मिला। श्री 1008 आदिनाथ जैन



सेवा समिति, सेक्टर-17, प्रतापनगर के सहयोग एवं मार्गदर्शन में आयोजित भक्तामर दीपार्चना में 48 परिवारों ने भक्तिभाव के साथ दीप प्रज्वलित कर भगवान आदिनाथ के चरणों में श्रद्धा अर्पित की। कार्यक्रम में आचार्य संत शिरोमणि गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महामुनिराज, आचार्य शिरोमणि भगवान श्री समयसागर जी महामुनिराज एवं आर्यिका शिरोमणि राष्ट्र गौरव श्री ज्ञानमती माताजी के जन्मजयंती अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में श्रद्धापूर्वक नमन किया गया। युवा परिषद परिवार एवं जैन समाज जयपुर की ओर से विभिन्न धार्मिक आयोजनों के माध्यम से आचार्य भगवंतों के प्रति श्रद्धा एवं कृतज्ञता व्यक्त की गई। भक्तामर दीपार्चना के दौरान श्रद्धालु भक्ति गीतों पर भाव-विभोर नजर आए। दीपकों की रोशनी और भक्तिमय वातावरण ने मंदिर परिसर को आध्यात्मिक आभा से भर दिया। युवा परिषद के महामंत्री श्री संजय गोधा ने भक्तामर दीपार्चना में शामिल पुण्यार्जक परिवारों एवं उपस्थित श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी सहयोगियों को धन्यवाद देते हुए भविष्य में भी धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में इसी प्रकार सहभागिता का आह्वान किया।

डॉ. निर्मल जैन को तीसरी बार मिली सड़क सुरक्षा परिषद की जिम्मेदारी

दो कार्यकालों के अनुभव और सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों को देखते हुए मंत्रालय ने जताया भरोसा



जयपुर.शाबाश इंडिया। सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में अनुभव और पिछले दो कार्यकालों में किए गए कार्यों को देखते हुए डॉ. निर्मल जैन को एक बार फिर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने 26 अक्टूबर 2026 को डॉ. निर्मल जैन को सड़क सुरक्षा परिषद, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, नई दिल्ली में पुनः जिम्मेदारी प्रदान की। इसके साथ ही उन्हें लगातार तीसरी बार मंत्रालय से जुड़ी इस जिम्मेदारी का अवसर मिला है। डॉ. निर्मल जैन ने पिछले दो कार्यकालों के दौरान देशभर में सड़क सुरक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों पर कार्य किया। इस दौरान उन्होंने कई क्षेत्रों का दौरा कर सड़क सुरक्षा व्यवस्था, यातायात जागरूकता और संबंधित विभागीय कार्यों का अनुभव प्राप्त किया। उनके इसी अनुभव और कार्यों को देखते हुए मंत्रालय ने उन्हें पुनः जिम्मेदारी सौंपी है। नई जिम्मेदारी के तहत सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम, यातायात नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और सड़क सुरक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने से जुड़े प्रयासों में उनके अनुभव का उपयोग किया जाएगा। लगातार तीसरी बार जिम्मेदारी मिलने को डॉ. निर्मल जैन के पिछले कार्यकालों में किए गए कार्यों और सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में उनकी सक्रियता से जोड़कर देखा जा रहा है।

ललितपुर के अमन जैन को “युवा धर्मप्रभावना रत्न” सम्मान

धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों में योगदान के लिए मिली विशेष सम्मानोपाधि



ललितपुर.शाबाश इंडिया। जनपद के मड़वारा स्थित महावीर नगर निवासी अमन जैन को दशलक्ष महापर्व के अवसर पर युवाओं में धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्कारों के संवर्धन और जैन सिद्धांतों के प्रति निष्ठा के लिए “युवा धर्मप्रभावना रत्न” सम्मानोपाधि से सम्मानित किया गया। अमन जैन का जन्म 18 जुलाई 2002 को लक्ष्मी चंद्र जैन एवं वंदना जैन के परिवार में हुआ। वे वर्तमान में मंगलायतन विश्वविद्यालय के आयुर्वेद कॉलेज से बीएएमएस की पढ़ाई कर रहे हैं। धार्मिक गतिविधियों के साथ युवाओं को आध्यात्मिक मूल्यों और सदाचार से जोड़ने की दिशा में उनके प्रयासों की सराहना की गई। अमन जैन के नेतृत्व में ‘संयम पथिक प्रतियोगिता’ का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य युवाओं को धर्म, अनुशासन और आत्मसंयम से जोड़ना रहा। प्रतियोगिता के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया गया कि धर्म केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि दैनिक जीवन में अहिंसा, सत्य और सदाचार को अपनाना भी धर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके अलावा युवाओं में धार्मिक आस्था और सामाजिक समरसता की भावना विकसित करने के उद्देश्य से उनके नेतृत्व में श्री महावीरजी की तीर्थयात्रा का आयोजन भी किया गया। आयोजन में परिवार, मित्रों और जैन विद्यार्थियों का सहयोग रहा। सम्मान मिलने पर आयोजकों एवं सहयात्रियों ने अमन जैन के उज्ज्वल भविष्य, सम्यग्दर्शन में दृढ़ता और निरंतर समाजसेवा की मंगलकामनाएं कीं। आयोजकों ने कहा कि जो स्वयं संयम और सदाचार के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए दूसरों को भी धर्म से जोड़ने का प्रयास करता है, वही वास्तविक अर्थों में धर्मप्रभावना का वाहक बनता है।



जे जे एफ कनेक्ट बिजनेस मीट में व्यापारिक एकता का नया अध्याय

महापौर सुनील कोठारी ने किया जे जे एफ कनेक्ट डिजिटल प्लेटफॉर्म का शुभारंभ, समाज के उद्यमियों को आपसी व्यापार और सहयोग बढ़ाने का मिला मंच

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर ज्वेल्स फाउंडेशन एवं जे जे एफ नेक्स्ट के तत्वावधान में सोमवार को होटल हयात रीजेंसी, मानसरोवर में जे जे एफ कनेक्ट बिजनेस मीट एवं एप लॉन्च कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें समाज के उद्यमियों और व्यवसायियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य आपसी व्यापारिक संबंधों को मजबूत करना और नए व्यावसायिक अवसर विकसित करना रहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जयपुर के महापौर सुनील कोठारी रहे। उन्होंने जे जे एफ कनेक्ट डिजिटल प्लेटफॉर्म का शुभारंभ किया तथा समाज के सदस्यों को आपसी सहयोग, व्यापारिक एकता और सामूहिक विकास के लिए प्रेरित किया। महापौर कोठारी ने अपने संबोधन में जयपुर की स्वच्छता, ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण और शहर के समग्र विकास पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि शहर के विकास में सामाजिक संगठनों, व्यापारियों और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण है। उन्होंने जे जे एफ की पहल की सराहना करते हुए इसे समाज में व्यापारिक सहयोग और एकजुटता बढ़ाने की दिशा में सकारात्मक कदम बताया। जे जे एफ के संस्थापक हितेश भांडिया ने संस्था की यात्रा और समाज को एकजुट रखने के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जे जे एफ का प्रयास सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने के साथ सदस्यों के बीच सहयोग की भावना विकसित करना है। जे जे एफ नेक्स्ट के अध्यक्ष देवांग शाह ने बताया कि पहल का उद्देश्य समाज के परिवारों को सामाजिक आयोजनों तक सीमित न रखकर उन्हें व्यापारिक रूप से भी एक-दूसरे से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि किसी सदस्य को किसी उत्पाद या सेवा की आवश्यकता होने पर पहला



अवसर समाज के व्यवसायियों को मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि लक्ष्य केवल संपर्क बढ़ाना नहीं, बल्कि वास्तविक व्यापार, रेफरल और दीर्घकालिक कारोबारी संबंध विकसित करना है। इस अवसर पर जे जे एफ कनेक्ट डिजिटल प्लेटफॉर्म का शुभारंभ किया गया। इसके माध्यम से सदस्य एक-दूसरे के

व्यवसायों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। प्लेटफॉर्म पर सदस्य निर्देशिका, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित बिजनेस सर्च, कार्यक्रमों की जानकारी, जन्मदिन एवं वैवाहिक वर्षगांठ की सूचनाएं तथा सदस्यों के विशेष ऑफर्स जैसी सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। कार्यक्रम में विशेष बिजनेस रेफरल सत्र और टेबल

आधारित नेटवर्किंग गतिविधियां भी आयोजित की गईं। इनके माध्यम से उद्यमियों को एक-दूसरे के व्यवसाय को समझने और संभावित व्यापारिक सहयोग के अवसर तलाशने का मंच मिला। जे जे एफ अध्यक्ष श्रेयांश धांधिया सहित संस्था के पदाधिकारियों ने इस पहल को समाज की आर्थिक प्रगति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। कार्यक्रम के समापन पर जे जे एफ अध्यक्ष निकिता धांधिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। आयोजकों के अनुसार, जे जे एफ कनेक्ट के माध्यम से समाज के 270 से अधिक परिवारों के बीच आपसी व्यापार, विश्वास और सहयोग की भावना को और मजबूत करने का प्रयास किया जाएगा। कार्यक्रम का संदेश रहा—“दोस्ती भी, मस्ती भी और बिजनेस भी!”

जे जे एफ कनेक्ट—
साथ जुड़ें, साथ बढ़ें।

पश्चिम बंगाल के इतिहास में ऐतिहासिक पहल! हावड़ा जेल में गूजी आचार्य वसुनंदी जी गुरुदेव की धर्मवाणी



मंगल प्रवचन से प्रभावित हुए कैदी, अनेक बंदियों ने मांसाहार एवं मादक पदार्थों के त्याग का लिया संकल्प

कोलकाता-हावड़ा शाबाश इंडिया

पश्चिम बंगाल के कोलकाता-हावड़ा स्थित जेल में राष्ट्रसंत परम पूज्य दिगम्बर जैन आचार्य भगवान श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज का मंगल प्रवचन आयोजित हुआ। इस दौरान आचार्य श्री ने बंदियों को अहिंसा, संयम, सदाचार और आत्मचिंतन का संदेश देते हुए जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, प्रवचन से प्रभावित होकर अनेक बंदियों ने मांसाहार एवं मादक पदार्थों का त्याग करने का संकल्प लिया। आयोजकों के अनुसार, पश्चिम बंगाल में

किसी दिगम्बर जैन संत के कारागार पहुंचकर प्रवचन देने की यह पहली घटना है। हालांकि, इस दावे की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है। आचार्य श्री की धर्मवाणी ने बंदियों को आत्ममंथन करने तथा अपनी गलतियों से सीख लेकर सदाचार के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। प्रवचन के दौरान कई कैदी भावुक भी हुए। उनके मन में अपने कृत्यों के प्रति पश्चाताप और जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने की भावना जागृत हुई। आयोजन को करुणा, आत्मपरिवर्तन और मानवता का संदेश जन-जन तक पहुंचाने की दिशा में प्रेरणादायी पहल बताया गया। आचार्य श्री के उपदेशों ने यह संदेश दिया कि अहिंसा, संयम और सदाचार के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को नई दिशा दे सकता है। कार्यक्रम में संजय काला इस्पात, अध्यक्ष, नवनीत बजाज, आर्यन जैन, अरुण जैन सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

महावीर इंटरनेशनल ने सेनेटरी नैपकिन किए वितरित



खरवाड़ा शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल केंद्र खरवाड़ा की ओर से सेवा कार्यक्रम के तहत रानी रोड स्थित आकाश कॉलेज में अध्ययनरत बालिकाओं को सेनेटरी नैपकिन वितरित किए गए। कार्यक्रम संरक्षक अध्यक्ष दिनेश जैन, अध्यक्ष मुकेश कलाल एवं सचिव जितेंद्र जैन के निर्देशन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में कॉलेज की उप प्राचार्य भावना मेघवाल एवं कार्यालय सहायक कनक लता के नेतृत्व में प्रथम, तृतीय एवं पंचम सेमेस्टर की 50 बालिकाओं को सेनेटरी नैपकिन वितरित किए गए। इस अवसर पर उप प्राचार्य एवं कार्यालय सहायक ने “झिझक छोड़ो, चुप्पी तोड़ो, खुलकर बोलो” अभियान के तहत माहवारी स्वच्छता एवं स्वास्थ्य प्रबंधन की जानकारी दी। उन्होंने माहवारी के दौरान होने वाली सामान्य समस्याओं, उनके समाधान तथा सेनेटरी पैड के उचित उपयोग और स्वच्छता के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में महावीर इंटरनेशनल के उपाध्यक्ष पुष्कर जैन, पूर्व सचिव मनोज कोठारी, नरेश अग्रवाल, कमल प्रकाश, हितेश पंचोली, संयुक्त सचिव दिलीप जैन, पूर्व उपाध्यक्ष सुरेश जैन तथा सदस्य नागेंद्र कोठारी, श्याम सुथार एवं किशोर दवे सहित कॉलेज स्टाफ मौजूद रहा।

हर घर में जन्मे लौहपुरुष

इंजी. अरुण कुमार जैन



हिमगिरि से गंगासागर तक, यशगाथा जिनकी गाता, राजकोट से मिजोरम तक, जन-जन मन को भाता। बिखरे-छिरे मां के आंचल को, जिसने एक कराया, सैकड़ों रियासतों को मिलाकर, भारत राष्ट्र बनाया। लौहपुरुष सरदार, राष्ट्र ललाट के चंदन हैं, भारत मां के दिव्य पूत को, शत-शत नमन-वंदन है।

वर्ष डेढ़ सौ बीते, करमसद फिर मुस्काया, नडियाद की पावन धरती पर, अनुपम रत्न जो आया। शिक्षा-संस्कार पाकर उसने, आगे कदम बढ़ाया, गए विलायत, बैरिस्टर बन, देश में नाम कमाया। बारडोली के कृषकों को, आकर दिया सहारा, किसानों ने संघर्ष जीता, झुका अत्याचारी शासन सारा।

गांधीजी के साथ चले, जनसेवा व्रत था, संयम, दृढ़ता और समर्पण ही जीवन-व्रत था। न्यायालय में बहस चल रही थी, तार एक तब आया, नहीं रहीं जीवन-संगिनी, संदेश जो लाया। किंचित भी विचलित नहीं हुए, बहस रही जारी, मन के भावों पर कर्तव्य की विजय रही भारी।

लौहपुरुष सरदार बने, नायक भारत के, प्रधानमंत्री पद न चाहा, रहते बापू-नेहरू के। फिर भी खंड-खंड भारत को एक सूत्र में बांधा, भोपाल, जोधपुर, हैदराबाद को भारत से जोड़ा। कश्मीर और जूनागढ़ का संकट भी सुलझाया, लौहपुरुष की दृढ़ता ने, भारत का मान बढ़ाया।

टूटा चश्मा, सादे वस्त्र, यही आभूषण इनके, श्रेष्ठ रत्न मां के, जैसे भट्ठी में सोना तपकर निखरे।

15 दिसंबर 1950 वह दुर्दिन आया, महाशोक में भारत मां का मुख कुम्हलाया। दूर कहीं भारत का वह पूत चला गया था, जननी का रूठा भाग्य, अंधकार घना था।

जन्मदिवस पर कोटि नमन, वंदन स्वीकारें, हर घर में जन्मे लौहपुरुष, हम सब यही पुकारें। विश्वगुरु बने भारत, युगनायक बन जाए, सरदार पटेल के गुण हर जन अपने जीवन में अपनाए।



संपर्क : अमृता हॉस्पिटल, सेक्टर 88, फरीदाबाद, हरियाणा, मोबाइल : 7999469175

जियो की धमाकेदार एंट्री, रिलायंस बना देश का नंबर 1 कारोबारी समूह



टाटा समूह दूसरे और अदाणी समूह तीसरे स्थान पर

मुंबई, शाबाश इंडिया

शेयर बाजार में जियो प्लेटफॉर्म की धमाकेदार लिस्टिंग के साथ देश के सबसे मूल्यवान कारोबारी समूहों की रैंकिंग बदल गई। बुधवार को जियो का शेयर 1,358 रुपये पर सूचीबद्ध होते ही रिलायंस समूह ने टाटा समूह को पीछे छोड़कर पहला स्थान हासिल कर लिया। जियो की लिस्टिंग के बाद रिलायंस समूह की सूचीबद्ध कंपनियों का संयुक्त बाजार पूंजीकरण 28.9 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। टाटा समूह 25.6 लाख करोड़ रुपये के

साथ दूसरे और अदाणी समूह 16.6 लाख करोड़ रुपये के साथ तीसरे स्थान पर रहा। जियो का शेयर 1,119 रुपये के इश्यू प्राइस के मुकाबले 1,358 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ, जो 21.4% प्रीमियम है। इस भाव पर जियो का बाजार पूंजीकरण 12.5 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज और जियो प्लेटफॉर्म की संयुक्त बाजार वैल्यू 28.7 लाख करोड़ रुपये हो गई। जियो प्लेटफॉर्म के शेयरधारकों की संख्या भी देश में सबसे अधिक बताई गई है। कंपनी के कुल 79.8 लाख शेयरधारक हैं। मुंबई स्थित नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में जियो की लिस्टिंग के अवसर पर पारंपरिक बेल-रिंगिंग समारोह आयोजित किया गया। इसमें रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी, नीता अंबानी, आकाश अंबानी, ईशा अंबानी

और अनंत अंबानी शामिल हुए। लिस्टिंग से पहले आकाश, ईशा और अनंत अंबानी ने कार्यक्रम को संबोधित किया। जियो प्लेटफॉर्म के प्रबंध निदेशक आकाश अंबानी ने कहा, “आज की लिस्टिंग मंजिल नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है। हम खुलकर संवाद करेंगे, अपने वादे निभाएंगे और अपने काम से आपका भरोसा जीतेंगे।” लिस्टिंग के बाद बाजार पूंजीकरण के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज और जियो प्लेटफॉर्म देश की क्रमशः पहली और दूसरी सबसे मूल्यवान सूचीबद्ध कंपनियां बन गईं। दोनों कंपनियों की संयुक्त बाजार वैल्यू टाटा समूह की सभी सूचीबद्ध कंपनियों के कुल बाजार पूंजीकरण से 3.1 लाख करोड़ रुपये अधिक रही। इस तरह जियो की लिस्टिंग ने देश की सबसे मूल्यवान कंपनियों के साथ बड़े कारोबारी समूहों की रैंकिंग में भी बड़ा बदलाव कर दिया। यह तुलना कारोबारी समूहों की सूचीबद्ध कंपनियों के संयुक्त बाजार पूंजीकरण के आधार पर की गई है। रिलायंस समूह की गणना में जियो फाइनेंशियल सर्विसेज को शामिल नहीं किया गया है।

ज्ञान पाकर अहंकार और कठिनाइयों से घबराकर संयम छोड़ना साधना नहीं : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

भगवान महावीर की अंतिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र का स्वाध्याय शुरू; पहले 3 अध्ययनों में जीवन की दुर्लभ उपलब्धियों और आत्मबल का विवेचन

भीलवाड़ा, शाबाश इंडिया

मनुष्य की विडंबना है कि वह दूसरों की कमियां सुनने में जितनी रुचि रखता है, उतनी अपने जीवन को सुधारने वाली बातों में नहीं रखता। अच्छी बात भी जब गलत अर्थ में ग्रहण होने लगे तो दोष उपदेश में नहीं, उसे ग्रहण करने वाली दृष्टि में होता है। विनय केवल सिर झुकाने का नाम नहीं, बल्कि श्रेष्ठ विचारों को सही भाव से स्वीकार कर उन्हें आचरण में उतारने की पात्रता है। जहां यह पात्रता समाप्त हो जाती है, वहां ज्ञान सामने होते हुए भी मनुष्य उससे वंचित रह जाता है। ये विचार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने शांतिभवन में भगवान महावीर स्वामी की अंतिम दिव्य देशना श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के स्वाध्याय का शुभारंभ करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने सूत्र के 36 अध्ययनों में से पहले 3 अध्ययनों के मूल पाठ का स्वाध्याय कर उनके भावों का विवेचन किया। युवाचार्यश्री ने कहा कि वर्तमान दौर में संबंध, संघ और समाज संक्रमण की स्थिति से गुजर रहे हैं। बढ़ती जटिलताओं के बीच भगवान महावीर की देशना मनुष्य को विवेक और समता का मार्ग दिखाती है। परंपरा के अनुसार भगवान महावीर ने जीवन के अंतिम



2 दिनों में 16 प्रहर तक उत्तराध्ययन सूत्र की देशना दी थी। इसके 36 अध्ययनों में आचरण, साधना और आत्मकल्याण के महत्वपूर्ण सूत्र समाहित हैं।

विनयश्रुत अध्ययन : विनय से ज्ञान की पात्रता

प्रथम ‘विनयश्रुत’ अध्ययन का विवेचन करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि अविनीत व्यक्ति अच्छी बात का भी गलत अर्थ निकाल सकता है। आगम में इस प्रवृत्ति को समझाने के लिए विभिन्न दृष्टांत दिए गए हैं। इनका आशय गुणों की उपेक्षा कर दोषों में रुचि लेने की प्रवृत्ति को उजागर करना है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को

स्वयं से पूछना चाहिए कि उसे सद्बिचारों में अधिक रुचि है या दूसरों की निंदा में। विनय केवल बाहरी नम्रता नहीं, बल्कि गुरु के मार्गदर्शन के अनुरूप आचरण है। कपटपूर्ण व्यवहार से विश्वास अर्जित नहीं किया जा सकता। विनीत शिष्य को गुरु अर्थ सहित गहन श्रुतज्ञान प्रदान करते हैं। द्वितीय अध्ययन में वर्णित परिषदों का विवेचन करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि साधना की परीक्षा प्रतिकूलता के साथ अनुकूलता में भी होती है। जैन आगमों में 22 परिषद बताए गए हैं। भूख, प्यास और अपमान जैसी परिस्थितियां धैर्य की परीक्षा लेती हैं, वहीं प्रज्ञा और आकर्षण भी साधक को विचलित कर सकते हैं। उन्होंने

कहा कि बुद्धिमत्ता का अहंकार भी व्यक्ति की प्रगति में बाधा बन सकता है। अधिक हवा भरने पर गुब्बारे के फूटने का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि प्रज्ञा का होना उपलब्धि है, लेकिन उसे संभालने के लिए विनय आवश्यक है। परिषदों को आत्मबल बढ़ाने का माध्यम बताते हुए उन्होंने कहा कि जिस प्रकार कमजोर मांसपेशियां प्रतिरोध के अभ्यास से मजबूत होती हैं, उसी प्रकार कठिनाइयों का समता के साथ सामना करने से सहनशक्ति बढ़ती है। साधना में आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियों से घबराने के बजाय उनका धैर्यपूर्वक सामना करना आवश्यक है।

चतुरंगीय अध्ययन: चार दुर्लभ उपलब्धियां

तृतीय ‘चतुरंगीय’ अध्ययन का भावार्थ समझाते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि मनुष्य जन्म, जिनवाणी का श्रवण, उस पर श्रद्धा और संयम का पुरुषार्थ—ये 4 उपलब्धियां अत्यंत दुर्लभ हैं। एक के बाद दूसरी की प्राप्ति और भी कठिन है। मनुष्य जन्म मिलना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि जिनवाणी सुनकर उसके प्रति श्रद्धा विकसित करना और उसे आचरण में उतारना भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मनुष्य अक्सर अपने अभावों की चिंता करता है, लेकिन प्राप्त दुर्लभ अवसरों का महत्व नहीं समझता।

धर्म को जानने के साथ जीवन में उतारना भी आवश्यक: आचार्यश्री उदारसागर

चारों अनुयोग धर्म के अलग-अलग पक्षों को समझाकर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं

मुरैना, शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्य श्री 108 उदारसागर महाराज ने बड़े जैन मंदिर में प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए कहा कि धर्म को केवल सुनना और जानना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे जीवन में धारण करना आवश्यक है। जैन शास्त्रों में वर्णित चारों अनुयोगों का अपना विशिष्ट उद्देश्य है। प्रथमानुयोग और करणानुयोग के बाद चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि चारों अनुयोग साधक को धर्म के विभिन्न पक्षों से परिचित कराते हैं और आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

चरणानुयोग सिखाता है श्रेष्ठ आचरण का मार्ग

आचार्यश्री ने कहा कि चरणानुयोग में गृहस्थ श्रावक धर्म और मुनि धर्म का वर्णन मिलता है। यह अनुयोग जीवन में चारित्र्य की वृद्धि, उसकी रक्षा और संरक्षण का मार्ग बताता है। धर्म का वास्तविक प्रभाव तभी दिखाई देता है, जब उसके सिद्धांत व्यवहार और आचरण में उतरते हैं। संसार और शरीर की अनित्यता को समझकर मनुष्य को संयम, सदाचार और विवेक अपनाना चाहिए। चारित्र्य केवल कहने-सुनने की वस्तु नहीं, बल्कि उसे व्यवहार में उतारना आवश्यक है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जिस प्रकार सीढ़ी की प्रत्येक पायदान पर कदम

रखकर व्यक्ति मंजिल तक पहुंचता है, उसी प्रकार साधक श्रेष्ठ आचरण, संयम और धर्मसाधना के माध्यम से आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ता है। उन्होंने शास्त्रों के नियमित पठन-पाठन, मनन और चिंतन पर जोर देते हुए कहा कि धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन व्यक्ति को सही दिशा प्रदान करता है। शास्त्रों में बताए सिद्धांतों के अनुरूप आचरण करने से जीवन में सदुपयोग का विकास होता है और व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनता है।

द्रव्यानुयोग से होता है आत्मस्वरूप का बोध

द्रव्यानुयोग की व्याख्या करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि इसमें 7 तत्त्वों और 9 पदार्थों का वर्णन मिलता है। इसके अध्ययन से जीव अपने वास्तविक स्वरूप, कर्मबंधन और मुक्ति के मार्ग को समझने की दिशा में आगे बढ़ता है। इसका उद्देश्य केवल सैद्धांतिक जानकारी देना नहीं, बल्कि आत्मा के स्वरूप को समझने और आत्मानुभूति की ओर प्रेरित करना भी है। उन्होंने कहा कि जब मनुष्य आत्मा और शरीर के अंतर को समझने का प्रयास करता है, तब उसके भीतर आत्मचिंतन की भावना जागृत होती है। जैन दर्शन का अध्ययन व्यक्ति को अपने भीतर झांकने, विचारों का परीक्षण करने और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार द्रव्यानुयोग आत्मज्ञान की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

गाय के चारों स्तनों के समान उपयोगी हैं चारों अनुयोग

आचार्यश्री ने चारों अनुयोगों की उपयोगिता को सरल उदाहरण से समझाते हुए कहा कि जिस प्रकार गाय के चारों स्तनों का दूध



उपयोगी होता है, उसी प्रकार जैन धर्म के चारों अनुयोग भी महत्वपूर्ण हैं। किसी एक अनुयोग को समझकर दूसरे की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि प्रत्येक अनुयोग धर्म के अलग-अलग पक्ष को स्पष्ट करता है। उन्होंने बताया कि प्रथमानुयोग धार्मिक कथाओं और प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न करता है। करणानुयोग कर्मसिद्धांत और लोक की संरचना जैसे विषयों को समझने में सहायता करता है। चरणानुयोग धर्माचरण एवं चारित्र्य की प्रेरणा देता है, जबकि द्रव्यानुयोग तत्त्वज्ञान और आत्मस्वरूप के बोध का मार्ग प्रशस्त करता है। चारों अनुयोगों का समन्वित अध्ययन साधक को धर्म की व्यापक समझ प्रदान करता है। आचार्यश्री के प्रवचन का सार यही रहा कि शास्त्रों का अध्ययन तभी सार्थक है, जब उससे जीवन में सदाचार, संयम, आत्मचिंतन और आध्यात्मिक उन्नति की भावना विकसित हो। धर्म को समझने के साथ उसे आचरण में उतारना ही आत्मकल्याण की दिशा में सार्थक कदम है। धर्मसभा के शुभारंभ में मंगलाचरण श्रीमती गुंजन जैन ने प्रस्तुत किया। सभा का संचालन विद्वान नवनीत जैन शास्त्री ने किया। श्रावक श्रेष्ठियों द्वारा आचार्यश्री अभिनंदन सागरजी महाराज के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया गया।

आचार्य श्री विनम्रसागरजी महाराज के सान्निध्य में भक्तामर महामहोत्सव का छठा दिन संपन्न

प्रवचन के माध्यम से धर्मार्थधना, आत्मशुद्धि और सदाचरण का संदेश

छत्रपति संभाजीनगर, शाबाश इंडिया

श्री भक्तामर महामंडल विधान एवं पूजन महोत्सव के छठे दिन परम पूज्य उच्चारणाचार्य आचार्य भगवंत श्री विनम्रसागरजी महाराज के सान्निध्य में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम भक्तिमय वातावरण में संपन्न हुए। इस अवसर पर देशमुखनगर में चातुर्मास कर रही पूज्य आर्थिकारत्न विनयश्री माताजी ससंध का विधान स्थल पर मंगल पदार्पण हुआ। उनके आगमन से श्रावक-श्राविकाओं में उत्साह और भक्ति का वातावरण बना। महोत्सव के दौरान भक्तामर महामंडल विधान, संगीतमय पूजन और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से जिनेंद्र भगवान की आराधना की गई। आचार्य श्री विनम्रसागरजी महाराज के सान्निध्य में धर्मार्थधना का लाभ लेने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

पादप्रक्षालन एवं आरती का सौभाग्य

छठे दिन आचार्य श्री विनम्रसागरजी महाराज के पादप्रक्षालन का सौभाग्य संजय पहाड़े, सौ. अनिता पहाड़े, सौ. रक्षा पहाड़े एवं सौरभ पहाड़े परिवार को प्राप्त हुआ। मंगल आरती का सौभाग्य मंदाबाई शामलाल पहाड़े परिवार को मिला। कार्यक्रम की प्रस्तावना पंचायत अध्यक्ष महावीर पाटनी ने प्रस्तुत की। दीप प्रज्वलन चंद्रसागर धर्मशाला एवं वेरूळ क्षेत्र के पदाधिकारियों ने किया। पूज्य आर्थिकारत्न विनयश्री माताजी के दर्शन एवं आशीर्वाद के लिए भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

प्रवचन में धर्माचरण का संदेश

आचार्य श्री विनम्रसागरजी महाराज ने मंगल प्रवचन में धर्म, भक्ति, आत्मशुद्धि एवं सदाचरण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि धार्मिक विधि-विधानों के साथ जीवन में संयम, विनय, करुणा और आत्मचिंतन को भी महत्व देना आवश्यक है।



जिनेंद्र भगवान की भक्ति केवल कर्मकांड तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उसका प्रभाव व्यक्ति के आचरण और व्यवहार में भी दिखाई देना चाहिए। भक्तामर स्तोत्र के श्रद्धापूर्वक पाठ, विधान में अर्घ्य समर्पण एवं पूजन के माध्यम से श्रद्धालुओं ने अपनी भक्ति भावना व्यक्त की। आचार्य एवं साधु-संतों का सान्निध्य, दर्शन और धर्मविचारों का श्रवण

आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। आयोजकों ने श्रद्धालुओं से महोत्सव के आगामी धार्मिक कार्यक्रमों में भी अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्मलाभ लेने का आह्वान किया। उक्त जानकारी प्रचार-प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल, छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) ने दी।



अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन ने किया वैश्य महापौर एवं पार्षदों का सम्मान



वैश्य समाज के 364 घटकों के बंधु हुए शामिल

जयपुर, शाबाश इंडिया

वैश्य समाज की एकमात्र संस्था अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन राजस्थान की ओर से सोमवार को सी-स्कीम स्थित महावीर स्कूल

ऑडिटोरियम में वैश्य समाज के महापौर एवं पार्षदों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में वैश्य समाज के जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों एवं समाज के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन जयपुर के जिला अध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक सुधीर जैन गोधा तथा जिला महामंत्री

एवं सह-संयोजक संजय पाबूवाल ने बताया कि समाजसेवी सुनील जैन एवं अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। समारोह में जयपुर के महापौर सुनील कोठारी, जोधपुर के महापौर प्रसन्नचंद मेहता, उदयपुर के महापौर पारस सिंघवी,



विधायक कालीचरण सराफ तथा मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ सहित विभिन्न शहरों के वैश्य समाज के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। अलवर की महापौर सुमन लता अग्रवाल, पाली की महापौर नमिता बुबकिया एवं जयपुर नगर निगम के वैश्य पार्षदों ने भी समारोह में सहभागिता की। कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के राज्य प्रभारी ध्रुवदास अग्रवाल, प्रदेश अध्यक्ष एन.के. गुप्ता, प्रदेश महामंत्री गोपाल गुप्ता, स्वागत अध्यक्ष सत्यनारायण काबरा, सह-स्वागताध्यक्ष सुनील जैन, संयोजक सुधीर जैन, सह-संयोजक संजय पाबूवाल, प्रदेश कोषाध्यक्ष के.सी. परवाल, वरिष्ठ कार्यकारी अध्यक्ष रमेश तूंगावाला सहित समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं संगठन से जुड़े

प्रमुख लोग मौजूद रहे।

सामाजिक योगदान की सराहना

इस अवसर पर वैश्य समाज के जनप्रतिनिधियों के सामाजिक योगदान एवं जनसेवा के कार्यों की सराहना की गई। समारोह का उद्देश्य समाज के प्रतिनिधियों का सम्मान करने के साथ सामाजिक एकता, सहयोग एवं संगठनात्मक मजबूती को बढ़ावा देना रहा। इस दौरान समाज के लोगों ने आपसी समन्वय एवं सामाजिक विकास के लिए मिलकर कार्य करने का संदेश दिया।

बड़ी संख्या में समाजबंधुओं की सहभागिता

समारोह में राजस्थान जैन सभा जयपुर के अध्यक्ष सुभाष चंद जैन, राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावा, सुरेश कालानी, राधेश्याम विजयवर्गीय, मनीष गुप्ता, जे.डी. माहेश्वरी, केदार गुप्ता, चारु गुप्ता, सीमा सेठी, दिनेश गुप्ता, गिरिराज गर्ग, सुरेश पाटोदिया, रामबाबू सराफ, सोहनलाल ताम्बी, शंकर अग्रवाल, कमल सचेती, जे.के. जैन कालाडोरा, सारिका जैन, भारतभूषण जैन, तरुण जैन, सतीश गुप्ता, राकेश जैन कोटा सहित बड़ी संख्या में समाजबंधुओं की सहभागिता रही। @... पेज 12

वैश्य समाज के महापौर और पार्षदों का हुआ सम्मान, 364 घटकों के प्रतिनिधि जुटे

वैश्य एकता का मंच बना सम्मान समारोह, महापौर-पार्षदों को किया सम्मानित



जयपुर में 31 अक्टूबर को होगा जेएसएससी प्रिंसिपल्स कॉन्क्लेव 2.0

“लीडिंग लर्निंग, शेपिंग लेगेसीज” विषय पर शिक्षा जगत के विशेषज्ञ करेंगे भविष्य की शिक्षा, नेतृत्व और नवाचार पर मंथन

जयपुर.शाबाश इंडिया। जयपुर सहोदय स्कूल्स कॉम्प्लेक्स की ओर से जेएसएससी प्रिंसिपल्स कॉन्क्लेव 2.0 का आयोजन 31 अक्टूबर को होटल क्लार्क्स आमेर, जेएलएन मार्ग में किया जाएगा। “लीडिंग लर्निंग, शेपिंग लेगेसीज” विषय पर आयोजित होने वाले कॉन्क्लेव में शिक्षा जगत की प्रमुख हस्तियां भविष्य की शिक्षा, नेतृत्व, कौशल विकास और नवाचार जैसे विषयों पर विचार-विमर्श करेंगी। कार्यक्रम सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक चलेगा।

मनोज श्रीवास्तव होंगे मुख्य अतिथि

कॉन्क्लेव के मुख्य अतिथि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के निदेशक (प्रशिक्षण) मनोज कुमार श्रीवास्तव होंगे। अंतरराष्ट्रीय माइंड ट्रेनर एवं लाइफ कोच डॉ. नितिन सारस्वत

भी विभिन्न सत्रों में अपने विचार साझा करेंगे। वरिष्ठ फिल्म अभिनेता रजा मुराद विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और स्वागत गीत से होगी। इसके बाद जेएसएससी अध्यक्ष अशोक वैद स्वागत भाषण देंगे तथा केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के निदेशक का संबोधन एवं संवाद सत्र होगा। कार्यक्रम में विभिन्न श्रेणियों के पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे, जिनमें लाइफटाइम अचीवमेंट सम्मान प्रमुख है।

शिक्षा के बदलते स्वरूप पर मंथन

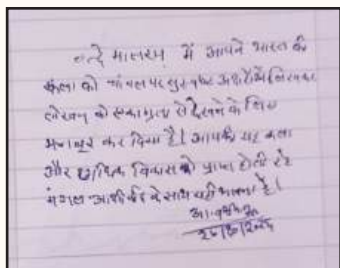
कॉन्क्लेव के विभिन्न सत्रों में प्रभावी नेतृत्व, 21वीं सदी के कौशल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित स्कूल स्वचालन, पाठ्यक्रम में बदलाव, उद्योग-शैक्षणिक संस्थानों के बीच समन्वय, डिजिटल उपकरण, भविष्य के रोजगार और वैश्विक अवसर जैसे विषयों पर चर्चा होगी। हास्य कवि शंभू शिखर भी विशेष सत्र में प्रस्तुति देंगे। वहीं “माता-पिता भागीदार या ग्राहक? स्कूल-अभिभावक संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करना” विषय पर पैनल चर्चा आयोजित होगी। इसके बाद रजा

मुराद का संबोधन, समापन समारोह और नेटवर्किंग सत्र होगा।

विभिन्न राज्यों के स्कूल प्रमुख होंगे शामिल

कॉन्क्लेव में जयपुर एवं आसपास के राज्यों के प्रमुख स्कूलों के प्रधानाचार्य, निदेशक और शिक्षा विशेषज्ञ भाग लेंगे। आयोजन को शिक्षा क्षेत्र में सहयोग, नवाचार और नेतृत्व क्षमता को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया गया है। आयोजकों के अनुसार, कॉन्क्लेव स्कूल नेतृत्व को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने और शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए संवाद का मंच प्रदान करेगा। कार्यक्रम में जेएसएससी अध्यक्ष एवं माहेश्वरी पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य अशोक वैद, उपाध्यक्ष एवं सुबोध पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य डॉ. संजय पाराशर, सचिव एवं स्टेप अहेड पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य पुनीत कुमार त्यागी, संगठन सचिव एवं जयश्री पेरिवाल ग्लोबल स्कूल की प्रधानाचार्या मंजू खोसला तथा कोषाध्यक्ष एवं साइन इंटरनेशनल स्कूल के निदेशक संदीप कुल्हारी की प्रमुख भूमिका रहेगी।

आचार्य वर्धमान सागर जी ने किया ‘वंदे मातरम’ कलाकृति का अवलोकन
सूक्ष्म लेखन कलाकार नीरू छाबड़ा की कलाकृति में चावलों पर देश की समस्त लिपियों में लिखा ‘वंदे मातरम’



जयपुर.शाबाश इंडिया। आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज ने पारस भवन में सूक्ष्म लेखन कलाकार नीरू छाबड़ा द्वारा तैयार की गई अनूठी “वंदे मातरम” कलाकृति का अवलोकन किया। इस कलाकृति में चावलों पर राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान के साथ देश की समस्त लिपियों में “वंदे मातरम” लिखा गया है। कलाकृति की सूक्ष्मता और विशेषता को देखकर आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने इसकी सराहना की। कलाकृति के अवलोकन के बाद आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने पंजिका पुस्तिका में अपने विचार भी लिखे। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने भी कलाकृति का अवलोकन किया।

दीपावली पर कुंभकारों के घर भी होगा उजाला, डॉ. दुर्गा शंकर सैनी की अनूठी पहल
तीन रंगों में तैयार किए मिट्टी के दीपक, जरूरतमंद परिवारों को किए जाएंगे निशुल्क वितरित



कोटा.शाबाश इंडिया। दीपावली पर हर घर रोशन हो और मिट्टी के दीपक बनाने वाले कुंभकारों के घर भी खुशियां आएँ, इसी उद्देश्य से समाजसेवी डॉ. दुर्गा शंकर सैनी पिछले 12 वर्षों से मिट्टी के दीपक अपनाने की मुहिम चला रहे हैं। इस वर्ष उनकी मुहिम के तहत केसरिया, सफेद और हरे रंग में मिट्टी के दीपक तैयार करवाए गए हैं। डॉ. सैनी के अनुसार, केसरिया रंग संस्कृति, सफेद शांति और हरा रंग हरियाली का प्रतीक है। इन दीपकों में मोम भरने का काम जारी है। दीपावली पर दीपक जरूरतमंद परिवारों के बीच निशुल्क वितरित किए जाएंगे। इस दौरान मिठाई बांटकर उनके साथ दीपावली की खुशियां भी साझा की जाएंगी। डॉ. सैनी ने कहा कि बड़े शोरूम में बिकने वाले चीनी निर्मित सजावटी दीपकों के बजाय मिट्टी के दीपक अपनाने से स्थानीय कुंभकारों को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर मिलेंगे। उनकी मुहिम का उद्देश्य भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा देने के साथ स्थानीय कारीगरों की मेहनत को सम्मान देना भी है।

आजाद शेरवानी

क्षुल्लक रत्न श्री गंभीरसागर वर्णी जी महाराज

त्याग, संयम और गुरु-समर्पण की साधना का प्रेरक जीवन

❖ श्रीश, ललितपुर

जैन संत परंपरा में कुछ संत ऐसे होते हैं, जिनका जीवन स्वयं में एक संदेश होता है। उनके त्याग में दिखावा नहीं होता, साधना में शोर नहीं होता और समर्पण में किसी पद की चाह नहीं होती। क्षुल्लक श्री 105 गंभीरसागर जी महाराज ऐसे ही साधकों में हैं, जिनके जीवन को समझने के लिए उनके नाम से जुड़ी गंभीरता के साथ उनकी साधना को भी समझना आवश्यक है। 13 अगस्त 1961 को जबलपुर में श्री कपूरचंद जी जैन एवं श्रीमती कस्तूरीबाई जी जैन के घर राकेश कुमार जैन का जन्म हुआ। सामान्य जीवन की राह पर आगे बढ़ते हुए उन्होंने शिक्षा ग्रहण की और परिवार के बीच जीवन व्यतीत किया। लेकिन उनके भीतर आध्यात्मिक चेतना उन्हें धीरे-धीरे संसार की सामान्य राह से अलग संयम और आत्मकल्याण के मार्ग की ओर ले जा रही थी।

ब्रह्मचर्य से संयम की ओर

1 जनवरी 1984 को जबलपुर में उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। यह उनके जीवन में आत्मसंयम और आत्मकल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। इसके बाद 10 फरवरी 1987 को सिद्धक्षेत्र नैनागिरि की पावन भूमि पर संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के करकमलों से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की। इसके साथ ही राकेश कुमार जैन की सांसारिक पहचान पीछे छूट गई और क्षुल्लक श्री 105 गंभीरसागर जी महाराज के रूप में उनकी आध्यात्मिक यात्रा प्रारंभ हुई। दीक्षा लेना भले ही सरल शब्द हो, लेकिन उसके पीछे निहित त्याग को जीवन में उतारना कठिन साधना है। इच्छाओं को सीमित करना,

सुविधाओं से दूरी बनाना, आत्मकल्याण को जीवन का उद्देश्य बनाना और प्रत्येक परिस्थिति में संयम को प्राथमिकता देना ही साधना की वास्तविक कसौटी है।

धर्म प्रभावना में योगदान

क्षुल्लक गंभीरसागर जी महाराज का धर्म प्रभावना के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। धार्मिक विधान, मंदिरों के शिलान्यास, वेदी प्रतिष्ठा, गौशालाओं, पाठशालाओं और श्रावक संस्कार शिविरों सहित विभिन्न धार्मिक गतिविधियों में उनका सानिध्य मिलता रहा है। जैन ग्रंथों के प्रकाशन तथा धर्म के प्रचार-प्रसार से जुड़े कार्यों में भी उन्होंने योगदान दिया है। उनकी साधना यह संदेश देती है कि धर्म का मार्ग केवल स्वयं आगे बढ़ने तक सीमित नहीं है, बल्कि दूसरों के लिए भी धर्म और संस्कारों का मार्ग प्रशस्त करना है।

गुरु संस्कार और संघ सानिध्य

उनके जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से प्राप्त दीक्षा संस्कार और वर्तमान में निर्यापक मुनि श्री 108 सुधासागर जी महाराज के संघ का सानिध्य है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जैसे महान संत से प्राप्त दीक्षा उनके जीवन की महत्वपूर्ण आध्यात्मिक उपलब्धि रही। गुरु से प्राप्त संस्कार साधक की जीवनभर की पूंजी होते हैं। परिस्थितियां बदल सकती हैं, लेकिन गुरु के प्रति श्रद्धा और संयम के प्रति निष्ठा साधक को निरंतर मार्गदर्शन देती है। वर्तमान में निर्यापक मुनि श्री 108 सुधासागर जी महाराज के संघ में रहकर उनकी साधना गुरु-परंपरा के प्रति समर्पण का उदाहरण प्रस्तुत करती है। गुरु का सानिध्य केवल शारीरिक निकटता नहीं, बल्कि विचारों, संस्कारों और साधना के मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने का भाव है। संसार में लोग अपनी पहचान बनाने के लिए पद, प्रतिष्ठा और संपत्ति अर्जित करते हैं, जबकि संत अपनी पहचान त्याग,



तप और संयम से बनाते हैं। उनके पास सांसारिक वैभव भले न हो, लेकिन उनका जीवन समाज को धर्म और आत्मकल्याण की दिशा में प्रेरित करने की क्षमता रखता है। क्षुल्लक श्री 105 गंभीरसागर जी महाराज का जीवन भी यही संदेश देता है कि धर्म केवल कहने की नहीं, बल्कि जीवन में उतारने की विषयवस्तु है। त्याग केवल वस्तुओं का परित्याग नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त करना भी है। इसी प्रकार गुरु-भक्ति केवल जयकारों तक सीमित नहीं, बल्कि गुरु के बताए मार्ग पर निष्ठापूर्वक चलने का नाम है। गंभीरसागर जी महाराज के नाम में गंभीरता, जीवन में संयम और गुरु के प्रति समर्पण में श्रद्धा की गहराई दिखाई देती है। ऐसे साधकों का जीवन हमें प्रेरणा देता है कि हमारी श्रद्धा केवल शब्दों तक सीमित न रहे, बल्कि हमारे आचरण और जीवन में भी दिखाई दे। सादर वंदन, क्षुल्लक श्री 105 गंभीरसागर जी महाराज। आपकी संयम साधना निरंतर आगे बढ़े, तप और त्याग की भावना पुष्ट हो तथा गुरु सानिध्य में आपकी आत्मकल्याण की यात्रा निरंतर मंगलमय रहे।

जय जिनेंद्र!

जन्मदिन को सेवा कार्य के रूप में मनाकर 51 प्रभुजनों को कराया सात्विक भोजन



लायंस क्लब अजमेर आस्था ने सेवा, समर्पण एवं मानवता का दिया संदेश

अजमेर शाबाश इंडिया

पीड़ित एवं जरूरतमंद लोगों की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहने वाली सामाजिक संस्था लायंस क्लब अजमेर आस्था की ओर से क्लब कोषाध्यक्ष लायन विनय लोढ़ा के जन्मदिन के उपलक्ष्य में तीर्थराज पुष्कर स्थित अपना घर वृद्ध आश्रम में सेवा कार्य आयोजित किया गया। इस अवसर पर आश्रम में

निवासरत 51 प्रभुजनों को शुद्ध एवं सात्विक मिष्ठानयुक्त भोजन कराया गया। क्लब सचिव लायन अनिल चोरडिया ने बताया कि कार्यक्रम संयोजक एवं पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष लायन पदम चंद जैन के संयोजन में आयोजित सेवा कार्य के दौरान आश्रम में निवासरत सभी प्रभुजनों की कुशलक्षेम पूछी गई और उन्हें स्नेहपूर्वक भोजन परोसा गया। सेवा कार्य के माध्यम से बुजुर्गों के प्रति सम्मान, संवेदनशीलता एवं आत्मीयता का भाव व्यक्त किया गया। क्लब अध्यक्ष लायन कमल बाफना ने कहा कि जन्मदिन जैसे विशेष अवसरों को जरूरतमंदों की सेवा के



साथ मनाना समाज में सकारात्मक संदेश देता है। ऐसे कार्य जरूरतमंद लोगों के चेहरों पर मुस्कान लाने के साथ समाज में मानवता, सहयोग और सेवा भावना को भी बढ़ावा देते हैं। क्लब कोषाध्यक्ष लायन विनय लोढ़ा के जन्मदिन को सेवा कार्य के रूप में मनाकर क्लब सदस्यों ने परोपकार एवं सामाजिक दायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। लायंस क्लब अजमेर आस्था की ओर से समय-समय पर किए जाने वाले ऐसे सेवा कार्य जरूरतमंद वर्गों को संबल देने के साथ सेवा, समर्पण और मानवता की भावना को मजबूत कर रहे हैं।

मुनि सेवा संघ, छत्रपति नगर का भव्य शपथ विधि समारोह संपन्न

मुनि श्री सुधासागर जी महाराज ने दिलाई सेवा की शपथ, कहा- मुनि सेवा ही सच्ची गुरु सेवा और जिनवाणी की सेवा



इंदौर.शाबाश इंडिया। तीर्थ चक्रवर्ती परम पूज्य मुनि श्री 108 सुधासागर जी महाराज के ससंध सानिध्य में छत्रपति नगर, इंदौर स्थित मुनि सेवा संघ का शपथ विधि समारोह आयोजित किया गया। समारोह में मुनि सेवा संघ के सदस्यों ने मुनिराजों की सेवा और वैयावृत्ति के प्रति समर्पण का संकल्प लिया। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दहू ने बताया कि मुनि श्री सुधासागर जी महाराज ने संघ के सदस्यों को सेवा की शपथ दिलाई। इस दौरान पूरा पंडाल “तीर्थ चक्रवर्ती की जय” और “मुनि सेवा संघ की जय” के जयकारों से गूंज उठा।

मुनि सेवा को बताया गुरु सेवा

शपथ दिलाते हुए मुनि श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा कि मुनि सेवा संघ का सदस्य बनना सौभाग्य की बात है। छत्रपति नगर अब मुनि भक्तों के नगर के रूप में भी अपनी पहचान बनाएगा। उन्होंने सदस्यों को मुनियों के आहार, विहार और वैयावृत्ति में सदैव तत्पर रहने का संकल्प दिलाते हुए कहा कि मुनि सेवा से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। मुनि की सेवा ही सच्ची गुरु सेवा और जिनवाणी की सेवा है। मुनि श्री ने संघ के सदस्यों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि संघ दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करे और उसके माध्यम से पूरे भारत में मुनि सेवा की प्रभावना हो। समारोह में धर्म प्रभावना समिति के नवीन आनंद गोधा, अशोक डोसी, सपना मनीष गोधा, वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. जैनेन्द्र जैन, कमल जैन चेलेजर, भूपेंद्र जैन, राकेश नायक, मुक्ता जैन, सोनाली बागड़िया सहित समाज के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। — राजेश जैन दहू, इंदौर

करवा चौथ : प्रेम और विश्वास का पर्व



चांदनी रात, सजी थाली, हाथों में मेहंदी, मुख पर लाली, सोलह श्रृंगार से सजती सुहागिन, प्रेममयी मनभावन प्यारी। करवा चौथ पावन त्योहार, पति-पत्नी के प्रेम का आधार, निर्जल व्रत रखती नारियां, आंखों में सपने, मन में प्यार।

पूजा की थाली, दीप की ज्योति, चांद में दिखे प्रियतम की मूरत, छलनी से देखें चांद का नूर, प्रेम का रिश्ता रहे भरपूर। चांद निकलता, खिलते चेहरे, प्रेम के रंग लगते हैं गहरे, पति के हाथों जल ग्रहण कर, सुखी जीवन की करती कामना।

यह व्रत नहीं सिर्फ परंपरा का नाम, इसमें बसा प्रेम और सम्मान, साथ निभाने का सत्य संकल्प, श्रद्धा से महके जीवन-कल्प। सुख-दुख दोनों बनें सहारा, प्रेम से रोशन हो जीवन सारा, करवा चौथ का संदेश यही, रिश्तों में प्रेम और विश्वास रहे सही।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक एवं समीक्षक)
इंदौर-452011 (मध्य प्रदेश)
मो. 98260 25986

दिवाली कप शतरंज प्रतियोगिता के पोस्टर का उपमहापौर सरोज कंवर ने किया विमोचन

जयपुर में 1 नवंबर को होगा सीनियर एवं अंडर-12 रैपिड ओपन शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन

जयपुर.शाबाश इंडिया

जयपुर में आयोजित होने जा रही जयपुर दिवाली कप सीनियर एवं अंडर-12 रैपिड ओपन शतरंज प्रतियोगिता-2026 के पोस्टर का विमोचन जयपुर की उपमहापौर सरोज कंवर ने किया। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता रणजीत सिंह एवं सामाजिक कार्यकर्ता राजा भैया उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के समन्वयक जिनेश कुमार जैन ने बताया कि प्रतियोगिता का आयोजन जयपुर चैस अकादमी की ओर से



रविवार, 1 नवंबर 2026 को ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल अकादमी, वैशाली नगर में किया

जाएगा। प्रतियोगिता को जयपुर जिला शतरंज संघ से मान्यता प्राप्त है। आयोजन में वाणी चैस

क्लब एवं जयपुर चैस क्लब का सहयोग रहेगा। जयपुर जिला शतरंज संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विक्रम सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता में सीनियर ओपन एवं अंडर-12 वर्ग के खिलाड़ी भाग लेंगे। विजेताओं को कुल 25,000 रुपये की नकद पुरस्कार राशि के साथ 59 ट्रॉफियां प्रदान की जाएंगी। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी दिए जाएंगे। आयोजकों के अनुसार, प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों एवं युवाओं में शतरंज के प्रति रुचि बढ़ाना तथा उन्हें खेल के माध्यम से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। अतिथियों ने प्रतियोगिता की सफलता के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि शतरंज बौद्धिक विकास, एकाग्रता और निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करने वाला महत्वपूर्ण खेल है।

टूर्नामेंट समन्वयक : जिनेश कुमार जैन
संपर्क : 9887977479

शरद पूर्णिमा पर सदाबहार चंद्रगीतों से सजी “चंद्रहार-2026” की संगीतमय शाम



11 चंद्रिकाओं का अभिनंदन, गीत-संगीत से मंत्रमुग्ध हुए श्रोता

जयपुर, शाबाश इंडिया। शरद पूर्णिमा के अवसर पर केशव नवनीत की ओर से सोमवार को राजस्थान चैंबर भवन के ओपन लॉन में 15वें वार्षिक “चंद्रहार-2026” कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सदाबहार हिंदी फिल्मों के चंद्रगीतों से सजी इस संगीतमय शाम में शहर के गणमान्य नागरिकों ने शिरकत की। कार्यक्रम का शुभारंभ जयपुर सांसद मंजू शर्मा, ओ.पी. अग्रवाल, आईएएस समित शर्मा एवं के.एल. जैन ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में पुराने हिंदी फिल्मों की



प्रस्तुतियों ने माहौल को खुशनुमा बना दिया। प्रख्यात गायक डॉ. गौरव जैन ने खोया-खोया चांद और चांद सिफारिश प्रस्तुत किए। शिखा माथुर ने तू चंदा मैं चांदनी तथा नीलम शर्मा ने रुक जा रात गीत प्रस्तुत कर श्रोताओं की सराहना प्राप्त की। राकेश कुमार ने चांद जैसे मुखड़े पे के साथ युगल गीतों में धीरे-धीरे चल और आज्ञा सनम मधुर चांदनी में की प्रस्तुतियां दीं। समारोह में खोया-खोया चांद, खुला आसमान, चांदनी रातें, प्यार की बातें, नीले गगन के तले और चांद छुपा बादल में जैसे लोकप्रिय गीतों की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। आयोजक

रामचरण बड़ाया ने बताया कि शरद पूर्णिमा के अवसर पर खीर की प्रसादी का वितरण भी किया गया।

11 चंद्रिकाओं का अभिनंदन

समारोह के दौरान 11 चंद्रिकाओं का अभिनंदन किया गया। इनमें डॉ. पूनम, निहारिका शर्मा, सुनीता मेठी, डॉ. राखी खन्ना, शिवाली गुप्ता, सुप्रिया सिंह, नम्रता व्यास, स्वीटी दाधीच, माया मीणा, स्वातिका कपूर एवं अनीता खंडेलवाल शामिल रहीं। कार्यक्रम में गायक कलाकारों को भी सम्मानित किया गया।

सुबोध पब्लिक स्कूल में ई-वेस्ट योद्धा अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रम



विद्यार्थियों ने पोस्टर, प्रश्नोत्तरी और जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से दिया ई-कचरे के उचित निस्तारण का संदेश

जयपुर, शाबाश इंडिया

सांगानेर स्थित सुबोध पब्लिक स्कूल में बुधवार, 28 अक्टूबर 2026 को विशेष अभियान-6 “मैं ई-वेस्ट योद्धा हूँ” के तहत विभिन्न शैक्षणिक एवं जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया। अभियान का उद्देश्य विद्यार्थियों को इलेक्ट्रॉनिक कचरे से होने वाले पर्यावरणीय नुकसान के प्रति जागरूक करना तथा इसके संग्रहण, पृथक्करण, पुनर्चक्रण और सुरक्षित निस्तारण के लिए प्रेरित करना रहा। यह अभियान केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से जारी परिपत्र संख्या एकेड-59/2026 के तहत “मिशन लाइफ के लिए ईको क्लब” और समग्र शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित किया गया।

अभियान में “ई-कचरा संग्रहण एवं जिम्मेदार निस्तारण” तथा “ई-कचरा कम करें” विषयों पर विशेष जोर दिया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विशेष प्रार्थना सभा से हुई, जिसमें विद्यार्थियों को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के अनुपयोगी होने के बाद पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव और कम उपयोग, पुनः उपयोग तथा पुनर्चक्रण के महत्व की जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी समझने और जिम्मेदार ई-वेस्ट योद्धा बनने के लिए प्रेरित किया गया। कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए ई-कचरा उत्पाद जागरूकता सत्र आयोजित किया गया। इसमें मोबाइल फोन, चार्जर, बैटरी, कंप्यूटर उपकरण और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामग्री के बारे में जानकारी दी गई। इसके बाद शैक्षणिक फिल्म का प्रदर्शन और संवादात्मक चर्चा भी हुई। कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों ने “मैं ई-वेस्ट योद्धा हूँ” विषय पर पोस्टर निर्माण गतिविधि में भाग लिया। विद्यार्थियों ने चित्रों, रंगों और संदेशों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, टिकाऊ



जीवनशैली और ई-कचरे के जिम्मेदार प्रबंधन का संदेश दिया। तैयार पोस्टरों को विद्यालय के कक्षा सूचना पट्टों पर प्रदर्शित किया गया। कक्षा 10 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए ई-कचरा जागरूकता प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। इसमें ई-कचरा प्रबंधन के पर्यावरणीय, तकनीकी और सामाजिक पहलुओं से जुड़े प्रश्न पूछे गए। प्रश्नोत्तरी के माध्यम से विद्यार्थियों के ज्ञान, तार्किक सोच और पर्यावरण के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया गया। विद्यालय में आयोजित विशेष जागरूकता प्रदर्शन में कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन, प्रिंटर, की-बोर्ड, बैटरी, चार्जर, केबल, हेडफोन और संग्रहण उपकरण सहित विभिन्न प्रकार के ई-कचरे को प्रदर्शित किया गया। विद्यार्थियों को समझाया गया कि ई-कचरे को सामान्य घरेलू कचरे से अलग रखा जाना चाहिए और अधिकृत संग्रहण, पुनः उपयोग तथा पुनर्चक्रण केंद्रों के माध्यम से इसका सुरक्षित निस्तारण किया जाना चाहिए। विद्यालय की प्रधानाचार्य आशि श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में आयोजित इस अभियान में विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ने पर विशेष जोर दिया गया। अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार विकल्प अपनाने और अपने घर एवं समाज में स्थायी जीवनशैली का संदेश पहुंचाने के लिए प्रेरित किया गया। विद्यालय प्रशासन ने अभियान के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए विद्यार्थियों को पर्यावरण जागरूकता के दूत के रूप में तैयार करने का संदेश दिया।